इकाई 8 बक्सर के युद्ध तक पूर्वी भारत में ब्रिटिश

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

भारत में अंग्रेजी प्रभुत्व का इतिहास बंगाल का ब्रिटिश साम्राज्यवादी व्यवस्था के अधीन हो जाने के साथ प्रारंभ हुआ। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको ज्ञान हो जाएगा :

- अंग्रेजों के द्वारा की गई बंगाल विजय की पृष्ठभूमि का;
- बंगाल के नवाब से ब्रिटिश प्रभुत्व को राजनैतिक सत्ता के रूपांतरण का; और
- उन कारकों का जिनके कारणवश सत्ता का रूपांतरण हुआ और इसके महत्व का।

8.1 प्रस्तावना

यह इकाई बंगाल में 1757 से 1765 तक के दौरान नवाब से अंग्रेजों को हुए राजनीतिक सत्ता के रूपांतरण का परिचय आपसे करायेगी। बंगाल को ब्रिटिश साम्राज्यवादी व्यवस्था के अधीन किस ढंग से किया गया, इसके विषय में कुछ विचार आपको खंड 2 की इकाई 1 से प्राप्त हुआ होगा। इस इकाई में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि यह मुख्यतः बंगाल के नवाब एवं अंग्रेजों के बीच वह व्यापारिक प्रतिद्वंद्विता थी जिसने 1750 के दशक में घटनाओं के क्रम का निर्णय किया। इस घटना क्रम के लिए महत्त्वपूर्ण निर्णायक कारण किसी भी नवाब की व्यक्तिगत असफलता न थी जैसा कि कुछ इतिहासकारों ने सिद्ध करने का प्रयास किया है। फिर भी प्रशासन में आयी गिरावट जिसका प्रारंभ 18वीं सदी में हुआ था, ने भी बंगाल की स्वतंत्रता राजनीतिक व्यवस्था के अंतिम रूप से धराशायी होने में निःसंदेह योगदान किया। यहाँ पर हम पहले अंग्रेजों की बंगाल विजय की पृष्ठभूमि और 1757 से 1765 तक के राजनैतिक घटनाचक्र का विवेचन करेंगे। फिर हम इस रूपांतरण और प्लासी तथा बक्सर की लड़ाइयों के महत्व की व्याख्या पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे क्योंकि ये घटनाएँ भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रसार में निर्णायक थीं।

8.2 ब्रिटिश विजय से पूर्व का बंगाल

आप खंड 2 में पढ़ चुके हैं कि यूरोपीय अर्थव्यवस्था में अर्थात् सामंतवाद में पूँजीवाद की ओर एवं फिर व्यापारिक पूँजीवाद से औद्योगिक पूंजीवाद की ओर हुए परिवर्तनों के कारणवश औपनिवेशिक साम्राज्य को स्थापित करने के लिए बहुत सी यूरोपीय शक्तियों के बीच कड़ी प्रतियोगिता हुई। साम्राज्यवाद के प्रसार की इस प्रक्रिया में 17वीं शताब्दी से ही बंगाल, डच, फ्रांसीसी एवं अंग्रेजी कंपनियों के बीच शिकार का मैदान बन गया। यह मुख्यतः बंगाल में अच्छे व्यापार की संभावनाओं तथा संपन्न संसाधनों के कारणवश था और इसलिए कई विदेशी कंपनियाँ आकर्षित हुई थीं। औरंगजेब के शासनकाल के दौरान भारत की यात्रा करने वाले यात्री फ्रांकोयस ने बंगाल के बारे में में लिखा है कि :

> "देश की धन प्रचुरता के कारण ·········· पुर्तगालियों, अंग्रेजों और डचों के बीच यह कहावत लोकप्रिय हो गई कि बंगाल प्रांत में प्रवेश के लिए सैंकड़ों द्वार हैं परंतु छोड़ने के लिए एक भी नहीं"।

18वीं सदी में बंगाल से यूरोप को निरंतर कच्चे उत्पादों जैसे शोरा, चावल, नील, काली मिर्च, चीनी आदि एवं रेशम, सूती कपड़े, कढ़ाई-बुनाई के सामान आदि का निर्यात होता था। प्रारंभिक 18वीं सदी में ब्रिटेन को एशिया से होने वाले

आयात का 60 प्रतिशत सामान बंगाल से ही जाता था। बंगाल की व्यापारिक क्षमताएँ ही अंग्रेजों के द्वारा इस प्रदेश में ली जाने वाली रुचि का स्वाभाविक कारण थीं।

अंग्रेजों का बंगाल के साथ निरंतर संबंध 1630 के दशक में शुरू हुआ। पूरब में प्रथम अंग्रेजी कंपनी की स्थापना 1633 में उड़ीसा में बालासोर में हुई और फिर हुगली, कासिम बाजार, पटना और ढाका में। 1690 के आस-पास अंग्रेजी कंपनी को सुतानति, कलकत्ता एवं गोविन्दपुर नाम के तीन गाँवों के जमींदारी अधिकार प्राप्त हो गये और कंपनी के द्वारा कलकत्ता की स्थापना के साथ ही बंगाल में अंग्रेजी व्यापारिक बस्ती को बसाने की प्रक्रिया का काम पूरा हो गया। 1680 तक बंगाल में कंपनी का वार्षिक निवेश 150,000 पौंड तक पहुँच गया।

17वीं शताब्दी से ही अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल में स्वतंत्र रूप से व्यापार करने दिया गया। इसके बदले में कंपनी को मुगल सम्राट को 3000 (350 पौंड) रुपए वार्षिक अदा करने पड़ते थे। जिस समय कंपनी मुगल सम्राट को बंगाल में स्वतंत्र व्यापार के लिए एक वर्ष में 350 पौंड अदा करती थी उस समय बंगाल से कंपनी का निर्यात 50,000 पौंड मूल्य से भी अधिक प्रति वर्ष का था।

परंतु प्रांतीय सूबेदार कंपनी को दी जाने वाली इस भांति के विशेषाधिकारों का समर्थन नहीं करते थे क्योंकि इससे उनके राजस्व को भारी नुकसान होता था। इसलिए प्रांतीय प्रशासन की ओर से अंग्रेजी कंपनी पर प्रांत में व्यापार के लिए अधिक अदायगी के लिए सदैव भारी दबाव रहता था। अंग्रजों ने अपनी ओर से बहुत से साधनों के द्वारा व्यापार पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश की। बंगाल में स्वतंत्र प्रभुत्व को स्थापित करने वाले सूबेदार मुर्शीद कुली खान कंपनी के द्वारा उपयोग किये जाने वाले विशेषाधिकारों को देने के समर्थन में नहीं था क्योंकि इसके कारणवश सरकारी कोष में नुकसान होता था। इसलिए बंगाल में 18वीं सदी के मध्य से पहले ही अंग्रेजों के व्यापारिक हितों एवं प्रांतीय सरकार के बीच झगड़ा पैदा हो गया।

जिस समय अंग्रेजों के उभरते व्यापारिक हित बंगाल की राजनीति के लिए एक गंभीर खतरा बनते जा रहे थे, उसी समय प्रांतीय प्रशासन में स्वयं ही कुछ कमजोरियाँ पैदा हो गई थीं। खंड 1 की इकाई 2 में आप पढ़ चुके हैं कि मुगल साम्राज्य के विभाजन के साथ ही बंगाल में कैसे एक स्वतंत्र प्रभुत्व का उद्भव हुआ।

इस प्रांतीय शक्ति का स्थायित्व निम्नलिखित कुछ निश्चित शर्तों पर निर्भर करता था :

- नवाब का शासन स्थानीय कुलीन वर्ग के एक शक्तिशाली गुट के समर्थन पर निर्भर करता था।
- उसको उन हिन्दू मुत सद्दियों के समर्थन की आवश्यकता पड़ती थी जिनके नियंत्रण में वित्तीय प्रशासन था।
- बड़े जमींदारों का समर्थन भी अति आवश्यक था क्योंकि वे न केवल सरकारी कोष को राजस्व देते थे बल्कि आवश्यकता पड़ने पर नवाब को सैनिक सहायता भी उपलब्ध कराते थे तथा अपने-अपने क्षेत्रों में कानून एवं व्यवस्था को भी बनाये रखते थे।
- बैंकों के मालिकों एवं व्यापारिक घरानों विशेषकर जगत सेठ का घराना जो बंगाल का सबसे बड़ा वित्तीय घराना था, के समर्थन तथा सहयोग की भी नवाबों को आवश्यकता थी।

इन विभिन्न प्रकार के गुटों की नवाब से आशाएँ भिन्न-भिन्न थीं। नवाब के शासन का स्थायित्व इन बहुत से हित वाले गुटों के बीच उचित संतुलन बनाये रखने पर निर्भर करता था। शासक एवं विभिन्न हित वाले गुटों के बीच के शक्ति समीकरण में आम आदमी का कोई स्थान न था। वे जमींदारों की बढ़ती मांगों के शिकार थे परंतु प्रशासन की तरफ से कोई सुरक्षा उपलब्ध नहीं करायी जाती थी। शासकों की ओर से साम्राज्यवादी विरोधी संघर्ष में आम जनता को शामिल करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया।

8.3 बंगाल की ब्रिटिश विजय : 1757-65

1757 से 1765 तक बंगाल का इतिहास नवाब से अंग्रेजों को राजनैतिक सत्ता के क्रमिक हस्तांतरण का इतिहास है। इस संक्षिप्त 8 वर्ष के समय के दौरान बंगाल के ऊपर तीन नवाबों सिराजउद्दौला, मीर जाफर और मीर कासिम ने शासन किया। परंतु वे नवाब की प्रभुसत्ता को कायम रखने में असफल रहे और अंततः शासन का नियंत्रण अंग्रेजों के हाथों में चला गया। अब हम 1757 से 1765 तक बंगाल के राजनैतिक घटना चक्र का विवेचन करेंगे कि अंततः किस ढंग से अंग्रेजों ने बंगाल के ऊपर अपना नियंत्रण कर लिया।

8.3.1 सिराजउद्दौला और ब्रिटिश

सिराजउद्दौला 1956 में अलवर्दी खां के बाद बंगाल का नवाब बना। सिराज के उत्तराधिकार का विरोध उसकी चाची घसीटी बेगम तथा पुर्णिया के सूबेदार उसके चचेरे भाई शौकत जंग ने किया। नवाब के दरबार में जगत सेठ, अमीचन्द, राज बल्लभ, राय दुर्लभ, मीर जाफर एवं कुछ अन्य लोगों का एक शक्तिशाली गुट था और उन्होंने भी सिराज के उत्तराधिकार का विरोध किया। नवाब के दरबार के इस आंतरिक असंतोष के अतिरिक्त नवाब की स्थिति को दूसरा गंभीर खतरा अंग्रेजी कंपनी की बढ़ती व्यापारिक गतिविधियों से था। नवाब एवं कंपनी के बीच व्यापारिक विशेषाधिकारों

को लेकर संघर्ष कोई नया नहीं था। परंतु सिराजुद्दौला के शासन काल में कुछ अन्य निश्चित कारणों को लेकर दोनों के बीच के रिश्ते और तनावपूर्ण हो गये। वे कारण निम्नलिखित हैं :

- नवाब की आज्ञा के बिना अंग्रेजी कंपनी के द्वारा कलकत्ता की किलेबंदी
- कंपनी को दिये गये व्यापार अधिकारों का इसके अधिकारियों के द्वारा अपने व्यक्तिगत व्यापार के लिए दुरुपयोग किया गया।
- कंपनी ने कलकत्ता में राज बल्लभ के पुत्र कृष्णदास को शरण दी और वह नवाब की इच्छा के विरुद्ध विशाल सरकारी धन को लेकर भाग गया।

इन कारणों से नवाब सिराजुद्दौला कंपनी के साथ नाराज था। कंपनी इस बात को लेकर सिराजुद्दौला के बारे में चिंन्तित हो गई थी क्योंकि कंपनी के अधिकारियों को संदेह हुआ कि सिराज बंगाल में फ्रांसीसियों के साथ गठजोड़ करके कंपनी के अधिकारों में कटौती कर देगा। अंग्रेजों के कलकत्ता किले पर सिराज के आक्रमण ने खुले संघर्ष को और तेज कर दिया।

राबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में मद्रास से शक्तिशाली अंग्रेज सेना के कलकत्ता पहुँचने से बंगाल में अंग्रेजों की स्थिति और मजबूत हो गई। कंपनी का नबाब के दरबार के षडयंत्रकारियों के साथ गठबंधन हो जाने से कंपनी की स्थिति और मजबूत हो गई। इसलिए अंग्रेजों की विजय प्लासी के लड़ाई के मैदान (जून, 1757) में होने वाले युद्ध में पूर्व ही सुनिश्चित हो गई थी। यह विजय कंपनी की सैनिक शक्ति की श्रेष्ठता के बल पर नहीं अपितु नवाब के अधिकारियों द्वारा षडयंत्र में मदद करने के कारण प्राप्त हुई। निश्चय के साथ यह कहना बड़ा मुश्किल है कि सिराज उचित कार्यवाही करने में क्यों असफल हुआ। अंततः वह स्वयं को भी न बचा सका और मीर जाफर के पुत्र मीरान ने उसका कत्ल कर दिया।

1 अंग्रेजों तथा मीर जाफ़र और उसके पुत्र मीरान के मध्य 1757 की संधि

8.3.2 मीर जाफर और अंग्रेज

प्लासी की लड़ाई से पूर्व ही क्लाइव ने मीर जाफर को नवाब का पद देने का वायदा किया था। यह सिराजुद्दौला के विरुद्ध अंग्रेजों की सहायता का उपहार था।

अंग्रेज अब बंगाल के राजा को बनाने वाले हो गये। मीर जाफर को अपने अंग्रेज मित्रों के द्वारा किये गये समर्थन के लिए भारी रकम को अदा करना पड़ा। परन्तु मुर्शिदाबाद के सरकारी कोष में क्लाइव और उसके अन्य साथियों की मांगों को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त धन न था। मीर जाफर ने अंग्रेजों को नजराने एवं हर्जाने के रूप में लगभग 1,750,000 रुपये अदा किये।

मीर जाफर जैसे ही सत्तासीन हुआ उसने तुरन्त निम्नलिखित गंभीर समस्याओं का सामना किया :

- मिदनापुर के राजा राम सिन्हा, पूर्णिया के हिज़ीर अली खां जैसे जमींदारों ने उसे अपना शासक मानने से इंकार कर दिया।
- मीर जाफर के कुछ सिपाही जिनको अपना वेतन निरंतर नहीं मिल रहा था वे विद्रोही हो रहे थे।
- उसको अपने कुछ अधिकारियों विशेषकर राय दुर्लभ की वफादारी पर संदेह था। उसे विश्वास था कि राय दुर्लभ ने जमींदारों को उसके विरुद्ध विद्रोह के लिए उकसाया था। परंतु राय दुर्लभ क्लाइव की शरण में था, इसलिए वह उसको छू भी न सका।
- मुगल बादशाह के पुत्र जो बाद में आलम शाह के नाम से जाना गया ने बंगाल के सिंहासन पर अधिकार करने का प्रयास किया।

नवाब की वित्तीय स्थिति भी काफी कमजोर थी और इसका मुख्य कारण कंपनी की बढ़ती मांगें एवं संसाधनों के प्रबंधन की अव्यवस्था थी। इन सभी के कारण मीर जाफर की निर्भरता अंग्रेजी कंपनी पर हो गई परंतु कंपनी कुछ कारणों से नवाब के साथ नाराज थी।

- अंग्रेजी कंपनी का ऐसा विचार था कि मीर जाफर डच कंपनी के सहयोग से बंगाल में अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव में कटौती करने की कोशिश कर रहा था।
- अंग्रेजों की सदैव बढ़ती मांगों को पूरा करने में भी मीर जाफर असफल रहा।

इसी बीच मीर जाफर के पुत्र मीरान की मृत्यु के कारण उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर फिर एक विवाद पैदा हो गया। मीरान के पुत्र और मीर जाफर के दामाद मीर कासिम के बीच इसके लिए संघर्ष हुआ और कलकत्ता के नये गवर्नर वॉन्सिटॉर्ट ने मीर कासिम का पक्ष लिया। वॉन्सिटॉर्ट के साथ एक गुप्त समझौते के द्वारा मीर कासिम कंपनी को आवश्यक धन अदा करने के लिए सहमत हुआ इस शर्त पर कि यदि वे बंगाल के नवाब के लिए उसके दावे का समर्थन करें। मीर जाफर पहले से ही अंग्रेजों के विश्वास को खो चुका था। अपनी देय तनख्वाह के लिए सेना के विद्रोह ने मीर जाफ़र को नवाब के पद से हटाने के लिए अंग्रेजों के दबाव डालने को और सरल बना दिया।

8.3.3 मीर कासिम और अंग्रेज

मीर कासिम भी बंगाल के सिंहासन पर उसी ढंग से पदासीन हुआ था जिस ढंग से मीर जाफर ने इसको प्राप्त किया था। अपने पूर्वाधिकारियों की भाँति ही, मीर कासिम को भी अंग्रेजों को भारी धन की अदायगी करनी पड़ी। इसके अतिरिक्त उसने बर्दवान, मिदनापुर तथा चिटगाँव के तीन जिलों को अंग्रेजी कंपनी को दे दिया। सत्ता को प्राप्त करने के बाद मीर कासिम ने निम्नलिखित दो महत्वपूर्ण कार्यों को किया :

- कलकत्ता में स्थित कंपनी से सुरक्षित दूरी को बनाये रखने के लिए मीर कासिम ने अपनी राजधानी को मुर्शिदाबाद से (बिहार) मुंगेर में हस्तांतरित कर दिया और,
- अपनी पसंद के अधिकारियों के साथ उसने नौकरशाही का पुनर्गठन किया और सेना के कौशल तथा क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उसका भी सुधार किया।

मीर कासिम के शासन के पहले कुछ महीने ठीक प्रकार से व्यतीत हुए। परंतु धीरे-धीरे अंग्रेजों के साथ रिश्तों में कड़वाहट पैदा होने लगी। इसके कारण थे :

- नवाब की बार-बार प्रार्थना करने पर भी बिहार का उप-सूबेदार राम नारायण अपने लेखा-जोखा को जमा नहीं कर रहा था। पटना स्थित अंग्रेज अधिकारियों के द्वारा राम नारायण का समर्थन किया गया था और वह कभी भी नवाब विरोधी अपनी भावनाओं को नहीं छिपाता था।
- कंपनी के दस्तक या व्यापार अधिकार पत्र का कंपनी के अधिकारियों के द्वारा अपने व्यक्तिगत व्यापार के लिए दुरुपयोग किये जाने के कारण नवाब एवं अंग्रेजों के बीच तनाव और बढ़ा।
- कंपनी के कारिन्दे अपने सामान पर कोई कर नहीं अदा करते थे। जब कि स्थानीय व्यापारियों को कर अदा करना पड़ता था। जहाँ एक ओर नवाब को कर राजस्व की हानि कंपनी के अधिकारियों द्वारा कर अदा न करने पर होती थी, वहीं दूसरी ओर स्थानीय व्यापारियों को कंपनी के व्यापारियों के साथ असमान कड़ी प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता था। इससे भी अधिक, कंपनी के अधिकारी नवाबों के अधिकारियों की पूर्ण अवहेलना करते थे। कंपनी के अधिकारी स्थानीय लोगों को अपना सामान कम दामों पर बेचने के लिए मजबूर करते थे। मीर कासिम ने गवर्नर वॉसिंटॉर्ट से इन कार्यों की शिकायत की परन्तु इसका कोई प्रभाव न हुआ। जैसा कि मीर जाफर के केस में घटित हुआ जबकि अंग्रेजों ने यह पाया कि मीर कासिम उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति करने में असफल रहा है और उन्होंने मीर कासिम को हटाने के लिए अवसर की तलाश शुरू कर दी। परंतु मीर कासिम भी अपने पूर्वाधिकारी से भिन्न इतनी आसानी के साथ आत्म समर्पण करने वाला न था। उसने मुगल सम्राट शाह आलम एवं अवध के नवाब शुजाउद्दौला की मदद से संयुक्त प्रतिरोध करने की कोशिश की। फिर भी, अंततः मीर कासिम अपने सिंहासन की रक्षा करने में असफल रहा और बक्सर की लड़ाई (1764) में पूर्वी भारत में अंग्रेजों की विजय एवं सर्वोच्चता को प्राप्त किया।

8.3.4 मीर कासिम के पश्चात्

बंगाल के सिंहासन पर मीर जाफर को वापस बैठा दिया गया। अंग्रेजों को उनकी सेना के रख-रखाव के लिए मिदनापुर, बर्दवान, और चिटगाँव के तीन जिले तथा बंगाल में कर उन्मुक्त व्यापार करने के अधिकार-पत्र (सनद) (नमक पर 2% कर के अतिरिक्त) को देने के लिए मीर जाफर सहमत हो गया। परंतु मीर जाफर का स्वास्थय अच्छा न था और इस घटना के समय कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसके छोटे से बेटे नजीमुद्दौला को नवाब नियुक्त किया गया। वास्तविक प्रशासन नायब-सूबेदार के द्वारा चलाया जाता था जिसको अंग्रेज अधिकार नियुक्त कर सकते थे और हटा सकते थे।

1765 की गर्मियों में बंगाल के गवर्नर के रूप में क्लाइव वापस आया। क्लाइव ने स्वयं को अपूर्ण कार्य को पूरा करने अर्थात् वह अंग्रेजों को बंगाल में सर्वोच्च राजनैतिक शक्ति बनाने में जुट गया। उसने मुगल सम्राट शाह आलम से संपर्क किया, शाह आलम स्वयं भी एक समझौते के अंतर्गत 1761 से अवध के नवाब शुजाउद्दौला का व्यवहारिक तौर पर बंदी था। अगस्त 1765 में शाह आलम एवं क्लाइव के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। इस समझौते के द्वारा शाह आलम को कंपनी ने इलाहाबाद तथा आस-पास के क्षेत्रों को दे दिया, जबकि बादशाह ने एक फरमान के द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा की दीवानी प्रदान कर दिया। अंग्रेजों को दीवानी के अधिकारं और बंगाल के राजस्व या वित्तीय प्रशासन पर पूर्ण नियंत्रण प्रदान कर दिया गया।

सुरक्षा, कानून एवं व्यवस्था और न्याय के प्रशासन का उत्तरदायित्व नवाबों के हाथों में था। लेकिन बक्सर के युद्ध के बाद नवाबों को सैनिक शक्ति वास्तव में मृतप्रायः हो गई थी। कंपनी को दीवानी मिल जाने के बाद नवाबों की शक्ति पूर्णतः समाप्त हो गई।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 1757 से 1765 तक के राजनीतिक घटनाओं के कारण बंगाल के नवाबों से अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को राजनैतिक सत्ता का हस्तांतरण क्रमिक रूप से हुआ। आगामी भाग में हम उन कारणों को समझने का प्रयास करेंगे जिनसे यह परिवर्तन आया।
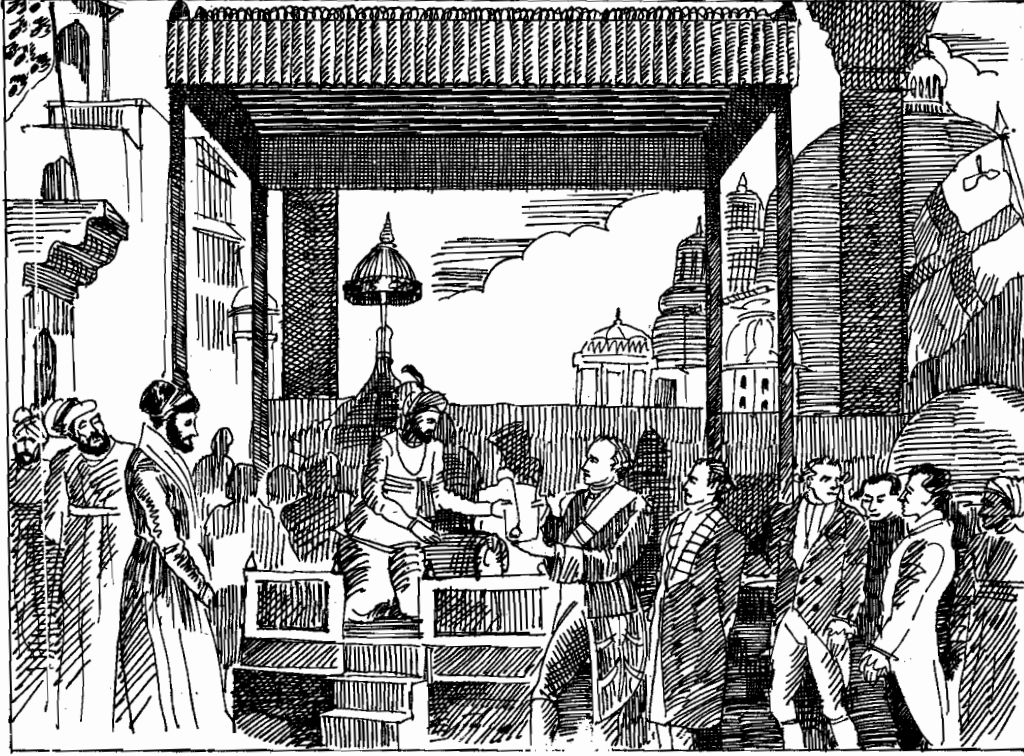
2 मुगल बादशाह शाह आलम से बंगाल की दीवानी प्राप्त करते हुए क्लाइव

बोध प्रश्न 1

1) बंगाल राजनीति की क्या प्रकृति थी ? अपने उत्तर को 100 शब्दों में लिखिये।

....

....

....

....
....
....
....
....
....
....

2) बंगाल के नवाबों तथा अंग्रेजों के रिश्तों में तनाव क्यों उत्पन्न हुआ? 100 शब्दों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

3) निम्नलिखित कथनों पर सही (√) या गलत (×) के चिन्ह लगाइए।

   1) बंगाल में अंग्रेजी कंपनी के उन्मुक्त व्यापार का बंगाल के नवाबों ने विरोध नहीं किया।
   2) बंगाल में कंपनी के बढ़ते व्यापार ने बंगाल के शासकों के वित्तीय संसाधनों में वृद्धि की।
   3) सिराजुद्दौला ने बंगाल में व्यापार के विशेषाधिकार का कंपनी के अधिकारियों द्वारा किये गये दुरुपयोग का विरोध किया।
   4) मीर जाफर की सेना ने उसके विरुद्ध इसलिए विद्रोह किया क्योंकि वह उनका वेतन देने में असफल रहा।
   5) अंग्रेज मीर कासिम के आलोचक इसलिए हो गये क्योंकि वह अपना स्वतंत्र प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था।
   6) दीवानी अधिकार दिये जाने के कारण अंग्रेजी कंपनी को बंगाल के वित्तीय एवं प्रशासकीय मामलों में पूर्ण नियंत्रण कायम हो गया।

8.4 राजनीतिक रूपांतरण की व्याख्या

1757 से 1765 तक की राजनीतिक घटनाओं के संक्षिप्त विवरण से स्पष्ट है कि किस ढंग से अंग्रेजों ने धीरे-धीरे नवाब के आधिपत्य को कम किया और कैसे बंगाल पर अपने नियंत्रण को स्थापित किया। बंगाल में इस समय के दौरान जो कुछ घटित हुआ उसको कुछ इतिहासकारों ने "राजनीतिक क्रांति" का नाम दिया। इस क्रांति के क्या कारण थे, इस प्रश्न पर इतिहासकारों के भिन्न-भिन्न विचार हैं। कुछ इतिहासकारों के द्वारा क्रांति के कारणों को नवाबों की व्यक्तिगत असफलताओं में खोजने का प्रयास मान्य नहीं है। सिराजुद्दौला का अभिमान या मीर जाफर का विश्वासघात या मीर कासिम की व्यक्तिगत सीमाओं को बंगाल की राजनीतिक संरचना में होने वाले इस रूपांतरण का कारण नहीं माना जा सकता। अंग्रेजों तथा नवाबों के बीच के संघर्ष से जो प्रश्न जुड़े थे वे कुछ और ही एवं अधिक महत्वपूर्ण थे।

कुछ इतिहासकारों के द्वारा यह तर्क दिया गया है कि ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों के व्यक्तिगत स्वार्थों ने नवाबों के साथ संघर्षों को पैदा किया। अधिक व्यापार विशेषाधिकारों तथा उपहारों की आकांक्षाओं और उनके द्वारा स्वयं के सौभाग्य को बनाने के प्रयासों के कारण अंग्रेज लोग व्यक्तिगत रूप से नवाबों के प्रभुत्व का उल्लंघन करने लगे। कंपनी के अधिकारियों के द्वारा अपने व्यक्तिगत व्यापार के लिये व्यापार अधिकारों का दुरुपयोग नवाबों तथा ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच संघर्ष का मुख्य कारण था। मुगल सम्राट फरूखसियर ने 1717 में एक शाही फरमान के द्वारा केवल कंपनी के आयात एवं निर्यात पर मुक्त छूट प्रदान की थी न कि कंपनी कारिन्दों के व्यक्तिगत व्यापार के लिए। कंपनी

के अधिकारियों के द्वारा इस व्यापारिक विशेषाधिकार का दुरुपयोग अपने व्यक्तिगत व्यापार के लिए किये जाने से नवाबों के कोष के लिए काफी नुकसानदायक साबित हो रहा था। सिराजुद्दौला और मीर कासिम दोनों ने कंपनी से इस दुरुपयोग की शिकायत की परंतु स्थिति में कोई परिवर्तन न आया।

यदि अंग्रेजों के व्यक्तिगत स्वार्थ नवाबों के साथ संघर्ष के लिए उत्तरदायी थे, कंपनी भी उसके लिए समान रूप से उत्तरदायी थी। कंपनी और अधिक व्यापारिक विशेषाधिकारों के लिए नवाबों पर दबाव डालती रहती थी। ब्रिटिश बंगाल से डच एवं फ्रांसीसी कंपनियों को बाहर निकाल बंगाल के व्यापार पर अपना इजारेदारी नियंत्रण स्थापित करना चाहते थे। अंग्रेजी कंपनी ने नवाब की इच्छा के विरुद्ध अपनी सैन्य शक्ति को बढ़ाना शुरू कर दिया और कलकत्ता की किलेबंदी की। यह नवाब के आधिपत्य को प्रत्यक्ष चुनौती थी। प्लासी लड़ाई के बाद अधिक छूटों के लिए दबाव बढ़ने लगा और इसने अपनी सेनाओं के खर्चों की पूर्ति करने के लिए नवाब से जमींदारियों की मांग करनी भी शुरू कर दी। सबसे अधिक चेतावनी तो यह थी कि कंपनी के अधिकारीगण नवाब के दरबार की राजनीति में भाग लेने लगे और वे उच्च अधिकारियों की नियुक्ति में भी हस्तक्षेप करते। इस प्रकार कंपनी का बढ़ता प्रभुत्व और इसके स्थानीय राजनीति में उलझनों ने नवाबों की स्वतंत्र स्थिति को गंभीर चुनौती दी। यह समझना कोई मुश्किल नहीं है कि कंपनी और इसके अधिकारियों ने 1757 से 1765 तक बंगाल के राजनीतिक घटनाक्रम को मूर्त देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस सब के साथ-साथ कुछ स्थानीय व्यापारियों अधिकारियों एवं जमींदारों की भूमिका बंगाल में ब्रिटिश राजनीतिक सर्वोच्चता को स्थापित करने में, कम महत्वपूर्ण न थी। बंगाल का सबसे बड़ा बैंकिंग घराना जगत सेठ और अमीचन्द जैसे धनी व्यापारी सिराजुद्दौला के गद्दी पर बैठने से खुश न थे। इन सेठों के संरक्षण में नवाबों का कोष था और उनका प्रशासन पर अच्छा खासा नियंत्रण था। सेठों एवं दूसरे व्यापारियों के अतिरिक्त नवाब के दरबार में जमींदारों एवं सैनिक कुलीनों के गुटों का भी काफी प्रभाव था। यह गुट अपने उन विशेष अधिकारों के खोने से आशंकित हो उठा जिनको ये पहले के नवाबों से भोग रहे थे। सिराजुद्दौला ने नागरिक एवं सैनिक प्रशासन को पुनर्गठित करने के लिए पुराने अधिकारियों को हटाना शुरू कर दिया तब इनकी आशंका को बल मिलने लगा। जिस नये कुलीन गुट को नवाब का संरक्षण प्राप्त हुआ था उसका प्रतिनिधित्व मोहनलाल, मीर मदन और ख्वाजा अब्दुल हादी खान करते थे और इन्होंने पुराने अधिकारियों को नवाब से अलग कर दिया। इस अलगाव और सिराजुद्दौला को उसके ही लोगों के द्वारा हटाकर कंपनी अच्छी प्रकार से सौदेबाजी कर सकती है, इन दोनों कारणों की परिणिति सिराजुद्दौला के विरुद्ध षडयंत्र करने में हुई। अंग्रेज जो अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सहयोगी की खोज में थे, इस असंतुष्ट गुट में उनको अपना सहयोगी प्राप्त हो गया। ब्रिटिश अधिक व्यापारिक विशेषाधिकारों को प्राप्त करना और बंगाल से संसाधनों का अधिक उपयोग करना चाहते थे। जबकि उनके भारतीय सहयोगी बंगाल में अपनी स्वयं की राजनीतिक सत्ता को स्थापित करने की इच्छा रखते थे। उनका एक समान लक्ष्य वर्तमान नवाब को हटाकर उसके स्थान पर एक समान पसंद के व्यक्ति को नवाब के पद पर बैठना था। इस प्रकार वह षडयंत्र रचा गया जिसने अंग्रेजों के बंगाल नवाबों पर नियंत्रण को स्थापित करने के कार्य को और सरल बना दिया। सारांश में कंपनी एवं उसके अधिकारियों के आर्थिक हित, मुर्शिदाबाद के दरबार में गुटबंदी में वृद्धि तथा दरबार के विभिन्न गुटों के बीच प्रतिद्वंद्वी हित, कुछ ऐसे कारण थे जिन्होंने 1757 से 1765 के बीच बंगाल में राजनीतिक रूपांतरण किया।

8.5 अंग्रेजों की सफलता का महत्त्व

पहले भाग में हम देख चुके हैं कि अंग्रेजों ने प्लासी (1757) और बक्सर (1765) के दोनों युद्धों में निर्णायक विजय प्राप्त करके किस ढंग से बंगाल में अपनी राजनीतिक सर्वोच्चता को स्थापित किया। कुल मिलाकर अंग्रेजों की इन दोनों लड़ाइयों में विजय के अतिरिक्त उनका अपना कुछ निश्चित महत्व था।

प्लासी की लड़ाई में अंग्रेजों की सफलता का बंगाल के इतिहास पर एक विशेष प्रभाव हुआ।

- अंग्रेजों की इस विजय से बंगाल के नवाब की स्थिति कमजोर पड़ गई भले ही यह विजय विश्वासघात या अन्य किसी साधन से प्राप्त की गई हो।
- बाह्य रूप से सरकार में कोई अधिक परिवर्तन न हुआ था और अभी भी नवाब सर्वोच्च अधिकारी था। लेकिन व्यवहारिक तौर पर कंपनी के प्रभुत्व पर निर्भर था और कंपनी ने नवाब के अधिकारियों की नियुक्ति में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया।
- नवाब के प्रशासन की आंतरिक कलह स्पष्ट रूप से प्रकट होने लगी और अंग्रेजों के साथ मिलकर विरोधियों के द्वारा किये गये षडयंत्र ने अंततः प्रशासन की ताकत को कमजोर किया।
- वित्तीय उपलब्धि के अतिरिक्त अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने फ्रांसीसी और डच कंपनियों को कमजोर बनाकर बंगाल के व्यापार पर सफलतापूर्वक अपनी इजारेदारी को स्थापित कर लिया।

बक्सर की लड़ाई के द्वारा उन्होंने बंगाल के ऊपर अपना पूर्ण राजनीतिक नियंत्रण स्थापित कर लिया। वास्तव में, हस्तांतरण की इस प्रक्रिया का प्रारंभ प्लासी की लड़ाई से हुआ था और इसकी चरम परणिति बक्सर के युद्ध में हुई।

- बक्सर की लड़ाई ने बंगाल नवाब के भाग्य के सूर्य को अस्त कर दिया और अंग्रेजों का बंगाल में एक शासक शक्ति के रूप में उदय हुआ।

- मीर कासिम ने बादशाह शाह आलम और अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध सफलतापूर्वक एक संघ का गठन किया। यह संघ अंग्रेजों के सम्मुख असफल हुआ। इस लड़ाई में अंग्रेजों की विजय ने ब्रिटिश शक्ति की सर्वोच्चता को सिद्ध कर दिया और उनके विश्वास को और मजबूत किया। यह विजय केवल अकेले मीर कासिम के विरुद्ध न थी बल्कि मुगल बादशाह एवं अवध के नवाब के विरुद्ध भी। अंग्रेजों की इस युद्ध में सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत के अन्य भागों में ब्रिटिश शासन की स्थापना बहुत दूर न थी।

बोध प्रश्न 2

1) क्या आप यह सोचते हैं कि नवाबों की व्यक्तिगत असफलता के कारण बंगाल में राजनीतिक रूपांतरण हुआ? अपना उत्तर 100 शब्दों में दें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) बक्सर की लड़ाई के महत्व पर 60 शब्द लिखिए।

....
....
....
....
....

8.6 सारांश

इस इकाई में हमने उस राजनीतिक प्रक्रिया के घटनाचक्र का विवरण किया जो बंगाल में 1757 से 1765 तक घटित हुआ। आशा करते हैं आप समझ गये होंगे कि प्रारंभिक स्तर पर अंग्रेजों की रुचि बंगाल के संसाधनों का और बंगाल की व्यापारिक क्षमताओं का उपयोग करके एशिया के व्यापार पर अपनी इजारेदारी कायम करना था। ईस्ट इंडिया कंपनी और उसके अधिकारियों की बढ़ती वह व्यापारिक रुचि थी जिसके कारण नवाबों के साथ संघर्ष ने जन्म लिया। बंगाल की राजनीति में अंतर्निहित कमजोरी ने अंग्रेजों को नवाब के विरुद्ध युद्ध में विजय प्राप्त करने में बड़ी मदद की। विभिन्न गुटों के शासकों से अलगाव ने बाह्य शक्तियों के लिए व्यवस्था को तोड़ने के लिए प्रेरित किया।

8.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपका उत्तर नवाबों की बहुत से गुटों पर निर्भरता और उसकी सीमित सीमायें, प्रशासन में एकरूपता का अभाव आदि पर केंद्रित होना चाहिए। देखें भाग 8.2।
2) आप अपने उत्तर में अंग्रेजों एवं नवाबों के बीच हितों को लेकर टकराव, बंगाल के आंतरिक राजनीति मामलों में अंग्रेजों का बढ़ता हस्तक्षेप आदि को शामिल करें। देखें भाग 8.3।
3) i) × ii) × iii) √ iv) √ v) √ vi) ×

बोध प्रश्न 2

1) भाग 8.4 में दी गई व्याख्याओं के प्रकाश में आप अपना उत्तर लिखें।
2) आप अपने उत्तर में बंगाल एवं भारत के अन्य भागों पर हुए प्रभावों, विशेषकर इसने भारत में अंग्रेजों को विजय प्राप्त करने में मदद की आदि को शामिल करें। देखें भाग 8.5।